शनिवार 7 नवंबर 2026

विकल्प

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के विद्यार्थियों का प्रायोगिक पत्र

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

बेंगलुरु से आएगी डब्बावालों की लक्ष्मी

मुंबई की 137 साल पुरानी डब्बावाला सेवा अब बेंगलुरु में विश्वास और स्वाद की नई रोशनी बिखेरने को तैयार है। डब्बावाला नेटवर्क के सीईओ ने विकल्प को दी यह ब्रेकिंग न्यूज़

पूरी खबर पढ़िए पेज 2 और 3 पर



6328 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला मुंबई महानगर



200000 खाने के डब्बों की हर दिन डिलीवरी



5000 डब्बावाला करते हैं कोडिंग सिस्टम से सप्लाई



1890 से डब्बावाला नेटवर्क की शुरुआत

भीतर के पन्नों पर विशेष...



शख्सियत

कस्बे के दुःख-दर्दों पर आठ दशक की पत्रकारिता

मप्र के छोटे से कस्बे शिवपुरी में रहकर आजादी के साल 1947 से लगातार पत्रकारिता करने वाले प्रेमनारायण नागर ने अपने जीवन के सौ साल पार कर लिए हैं। जिंदगी के अस्सी साल पत्रकारिता को देने वाले वे मप्र के सबसे बुजुर्ग पत्रकार हैं। यही नहीं, वे संसाधनों से भरी और सत्ता के साकेत में विराजित महानगरीय पत्रकारिता से दूर अंचल की पत्रकारिता के ज्वलंत प्रकाश स्तंभ हैं। उनकी पहली ख़बर गणेश शंकर विद्यार्थी ने छापी थी। श्री नागर अंतिम रूप से इंदौर के प्रतिष्ठित नईदुनिया से जुड़े रहे। उज्जैन में उनके पुत्र के आवास पर जाकर विकल्प ने उनसे लंबी बातचीत की। स्मृति भ्रंश के बावजूद उन्होंने अपनी पत्रकारिता के कई संस्मरण साझा किए।

श्रंखला

दिग्गज संपादक आएंगे पत्रकारिता के गुर सिखाएंगे

पत्रकारिता के सिद्धांतों के साथ अब विद्यार्थियों को मीडिया जगत के दिग्गजों के अनुभवों से भी सीखने का अवसर मिलेगा। पत्रकारिता विभाग 'संपादक के संग... कुछ कही, कुछ अनकही' नाम से विशेष संवाद श्रंखला शुरू कर रहा है। इसमें देश के प्रतिष्ठित समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के संपादक विद्यार्थियों से रूबरू होंगे और पत्रकारिता के अनुभव, चुनौतियां, अनकहे किस्से तथा संपादकीय निर्णयों की बारीकियां साझा करेंगे। श्रंखला की पहली कड़ी में लोकमत समाचार समूह के रोविंग एडिटर अभिलाष खांडेकर विद्यार्थियों से संवाद करेंगे। वे दैनिक भास्कर में नेशनल पॉलिटिकल एडिटर रह चुके हैं। खेल पत्रकारिता के साथ वन्यजीवन और वन्य प्राणियों पर उनकी गहरी समझ और लेखन के लिए भी वे पहचाने जाते हैं।



"Success can come to you by Courageous Devotion to the Task Lying in front of you"

डॉ. सी.वी. रमन

नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक

संपादकीय

बच्चों के हक़ में सर्वोच्च फ़ैसला

सर्वोच्च न्यायालय ने जस्टिस परदीवाला और जस्टिस के. विनोद चंद्रन की पीठ ने बाल अधिकार संगठन 'जस्ट राइट फॉर चिल्ड्रन अलायन्स' की याचिका पर अहम फ़ैसला सुनाया है। बेंच ने कहा कि बच्चों को इंटरनेट से दूर नहीं कर सकते, यह उनका मौलिक अधिकार है। संविधान के अनुच्छेद 21 और 19(1)(ए) के तहत इंटरनेट सुविधा देश के हरेक नागरिक का मौलिक अधिकार है। कोर्ट ने कहा सिर्फ़ बच्चों को इंटरनेट से वंचित रखना मतलब बच्चों को ही समस्या मानने जैसा है। सुप्रीम कोर्ट ने यौन शोषण सामग्री के लिए सोशल मीडिया कंपनी और प्लेटफार्म को जिम्मेदार ठहराया। यह फ़ैसला तब आया जब दुनिया के कई प्रमुख देशों ने 16 साल से कम उम्र के इंटरनेट यूज़र्स पर बैन लगा दिया है और क़रीब एक दर्जन से अधिक देश तैयारी कर रहें हैं। ऑस्ट्रेलिया दुनिया का पहला ऐसा देश है जिसने सबसे पहले प्रतिबंध लगाया। एसईआर की रिपोर्ट के अनुसार 89 प्रतिशत किशोरों के घर में स्मार्टफोन और लगभग 31 प्रतिशत किशोरों के पास ख़ुद का पर्सनल स्मार्ट फ़ोन है। 14 से 16 वर्ष के 57 प्रतिशत किशोर शिक्षा के लिए स्मार्टफोन इस्तेमाल करते हैं। इसी आयु वर्ग के 76 प्रतिशत किशोर सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। दरअसल, इंटरनेट अब केवल मनोरंजन का साधन नहीं रह गया है। शिक्षा, सूचना और अभिव्यक्ति के लिए इसकी उपयोगिता लगातार बढ़ी है।इंटरनेट से पूरी तरह दूर रखना उनके अवसरों को सीमित करने जैसा होगा। तकनीक से दूरी बनाकर बच्चों का भविष्य सुरक्षित नहीं किया जा सकता।

इंटरनेट के दूसरे पक्ष पर नजर डालें तो चिंताजनक है। ऑनलाइन बाल यौन शोषण, साइबर बुलिंग और आपत्तिजनक सामग्री बच्चों के सामने गंभीर चुनौती है। डिजिटल दुनिया में अपराध करने वाले लोग बच्चों की उम्र और अनुभवहीनता का फायदा उठाते हैं। आखिर तकनीक के नाम पर अरबों रुपये का कारोबार करने वाली कंपनियां बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदारी से कैसे बच सकती हैं? उनके पास आपत्तिजनक सामग्री की पहचान करने और उसे हटाने के पर्याप्त तकनीकी संसाधन हैं।

दुनिया के कई देश बच्चों के सोशल मीडिया इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया ने 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया खातों पर प्रतिबंध लागू किया है। लेकिन क्या प्रतिबंध ही इसका स्थायी समाधान है? बच्चों को डिजिटल दुनिया से काटने के बजाय उन्हें इसके सुरक्षित इस्तेमाल के लिए तैयार करना अधिक जरूरी है। यह जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं है। अभिभावकों को बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों के प्रति सजग रहना होगा और स्कूलों में डिजिटल साक्षरता को शिक्षा का हिस्सा बनाना होगा। सरकार को आपत्तिजनक सामग्री हटाने की प्रभावी व्यवस्था विकसित करनी होगी। साथ ही सोशल मीडिया कंपनियों को भी बच्चों की सुरक्षा के प्रति जवाबदेह बनाना होगा।

एमसीयू में खुला समय प्रबंधन का डब्बा

मुंबई डब्बावालों का पत्रकारिता के विद्यार्थियों से संवाद



● शर्वरी 1MAj

बेंगलुरु महानगर के लोगों को भी अब मुंबई महानगर के लोगों की तरह अपने अपने दफ्तरों में घर का ताजा खाना मिल सकेगा। मुंबई की डब्बावाला सेवा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी व निदेशक सुनील गावंडे ने यह बात भोपाल मे कही। वे यहां माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचार विश्वविद्यालय के एक कार्यक्रम में आए थे। उन्होंने इस अवसर पर विशेष भेंट में बताया कि पहली बार 137 साल पुरानी यह सेवा मुंबई से बाहर निकलेगी। मुंबई में इस सेवा ने खासी पहचान बनाई है। अपनी अनूठी कार्यप्रणाली और लगभग सौ फीसद त्रुटिरहित सेवा ने दुनिया भर में ख्याति अर्जित कर ली है। यहां तक कि इसका पाठ अब हॉवर्ड विश्वविद्यालय तक में पढ़ाया जा रहा है।

गावंडे ने बताया कि मुंबई में अपने अनुभवों और व्यवसाय कौशल को मांजकर वे अपने बिजनेस मॉडल का विस्तार करने जा रहे हैं। बेंगलुरु की कामकाजी दुनिया से उनके पास तक बार-बार मांग आ रही थी। गावंडे ने सेवा के विस्तार, पुराने कोडिंग सिस्टम, तकनीक और डिलीवरी व्यवस्था को लेकर कई अहम बातें कहीं।

इसके पहले विश्वविद्यालय के कार्यक्रम में एक सवाल के जवाब में उन्होंने बताया कि जोमैटो जैसी घरपहुंच सेवाओं, तकनीक और एआई की चुनौती में समय में भी मुंबई डब्बावाला आज अपने पुराने कोडिंग और डिलीवरी सिस्टम पर भरोसा करता है। हैरत की बात है कि उनका मानना है कि उनका डिलेवरी सिस्टम पिछले 100 वर्षों से यथावत चला आ रहा है और इसमें कोई बदलाव नहीं किया गया है। डब्बावाले आज भी छोटी दूरियों के लिए साइकलों पर चलते हैं और आवश्यतानुसार मेट्रो व अन्य साधनों का सहारा लेते हैं। वह कहते हैं- जरूरत से ज्यादा तकनीक का इस्तेमाल करने से मौजूदा व्यवस्था प्रभावित हो सकती है। उनका कोडिंग सिस्टम इतना पुख्ता है कि हजारों डब्बों में कोई डब्बा इधर से उधर नहीं होता। उनका दावा है कि उनका 99.9 प्रतिशत सटीक है। यानी इसकी सिक्स सिगमा रेटिंग है।

हालांकि टिफिन पहुँचाने का काम जितना आसान दिखाई देता है, वास्तव में उतना ही चुनौतीपूर्ण है; खासकर तब, जब 50 मंजिल ऊंची इमारतों में हजारों टिफिन पहुँचाने हों। आज के दौर में डब्बावाले इंसुलेटेड हॉट टिफिन के जरिए गरमा-गरम खाना पहुँचाते हैं। इनमें खाना दो से तीन घंटे तक गर्म रह सकता है और ग्राहक इन टिफिनों का इस्तेमाल कर रहे हैं। बातचीत के दौरान उन्होंने बिजनेस से जुड़े अपने भविष्य के प्लान भी साझा किए। वे फिलहाल अपना क्लाउड किचन खोलने पर काम कर रहे हैं।

एक पारसी बैंकर था पहला ग्राहक

1890 में एक पारसी बैंकर की घर के खाने की फरमाइश से डब्बावाला सेवा शुरू हुई। महादू हावजी बचे ने 35 डब्बावालों के साथ इसे संगठित किया। यही पहल आगे चलकर मुंबई की पहचान बन गई।

अक्षय कुमार को खिलाने की ख्वाहिश

डब्बावाला अक्षय कुमार को अपने हाथों का बना खाना खिलाना चाहते हैं। मौका मिला तो क्लाउड किचन शुरू कर उनके लिए खास मेन्यू तैयार करेंगे। उनके लिए अक्षय सिर्फ पसंदीदा अभिनेता नहीं, बल्कि खास मेहमान होंगे!

समीक्षा

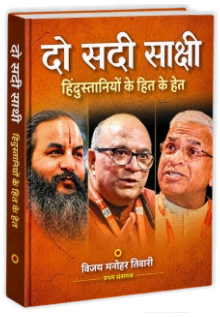

दो सदी साक्षी

हिंदुस्तानियों के हित के हेत

यह पुस्तक 'दो सदी साक्षी' भारत भवन में आयोजित तीन दिवसीय उत्सव का सम्पूर्ण संकलन है। दो सदी साक्षी का अर्थ हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने से हैं इस सब का मूलाधार हिन्दी पत्रकारिता के पितामह पंडित युगल किशोर शुक्ल हैं। उन्होंने मई 1826 में हिंदी का पहला अखबार उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन किया था और उस अखबार के प्रकाशन के उद्देश्य पर लिखे उनके अमर शब्द 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' इस पुस्तक का शीर्षक है। पुस्तक के प्रधान सम्पादक माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी हैं। हिन्दी के पहले समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड के संस्थापक सम्पादक युगल किशोर शुक्ल के पुण्य प्रयासों को समर्पित है। 222 पन्नों में संकलित कॉफी टेबल बुक को एक बेहतर लेआउट में संयोजित किया गया है। उत्सव के दौरान सभी महत्वपूर्ण गतिविधियों को बेहतर ढंग से छाया चित्रों और लेख के माध्यम से दर्शाया गया हैं। उत्सव में आए सभी अतिथियों के विचारों को सत्र के आधार पर शीर्षक के साथ उचित संकलित किया गया जो इसको एक अलग आयाम प्रदान करता है। सभी वक्ताओं के वक्तव्य को संपादित कर दो सदी साक्षी का निर्माण किया गया हैं। यह केवल पुस्तक ही नहीं एक जीता जागता दृश्य है।

–अभिषेक जाट 1MAJ

छात्रा के लाइव स्केच में डब्बावाला

● प्रांजल जग्यासी 1BAEJ



मुंबई के डब्बावालों के कार्यक्रम में शामिल होना मेरे लिए खास अनुभव रहा। कार्यक्रम मेरे लिए और भी यादगार तब बना, जब लाइव स्केच बनाने और उसके लिए सम्मानित होने का अवसर मुझे मिला। कार्यक्रम के दौरान ही मैंने डब्बावालों का लाइव स्केच बनाया। किसी व्यक्ति को सामने देखकर उसी समय उसका स्केच तैयार करना मेरे लिए काफी दिलचस्प अनुभव रहा।

यह सम्मान सिर्फ एक पुरस्कार नहीं बल्कि कला के लिए मिली सराहना है। अक्सर हम अपनी कला को अपने तक ही सीमित रखते हैं लेकिन जब उसे लोगों के सामने दिखाने का मौका मिलता है तो आत्मविश्वास भी बढ़ता है। डब्बावाला की मेहनत, समय का पालन , लोगों का विश्वास और अपने काम के प्रति समर्पण हमेशा से प्रेरणादायक रहा है। ऐसे लोगों के बीच अपनी कला को प्रस्तुत करना और सम्मान पाना गर्व की बात है। यह अनुभव मेरी कला को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करता रहेगा।



वैश्विक मंचों पर सराहना, सत्कार और सम्मान

मुंबई के डब्बों का दुनिया में डंका



प्रिंस चार्ल्स
चर्चगेट स्टेशन पर शाही मेहमान

4 नवंबर 2003 को मुंबई दौरे के दौरान तत्कालीन प्रिंस ऑफ वेल्स चार्ल्स चर्चगेट स्टेशन पहुँचे। उन्होंने डब्बावालों की कार्यप्रणाली, टिफिन की छंटाई और उनके रंग-कोड सिस्टम को समझा। डब्बावालों ने पारंपरिक नमस्ते से उनका स्वागत किया। इस मुलाकात ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में अहम भूमिका निभाई।



रिचर्ड ब्रैनसन
खुद बन गए डब्बावाला

Virgin Group के संस्थापक रिचर्ड ब्रैनसन ने 1 अप्रैल 2005 को डब्बावालों के साथ मुंबई की लोकल ट्रेन में सफर किया। अंधेरी से चर्चगेट तक की यात्रा में उन्होंने टिफिन उठाया और डब्बावालों से बातचीत की। उन्होंने इस अनुभव को मुंबई की असली जिंदगी से जुड़ने का अवसर बताया।



महारानी एलिजाबेथ द्वितीय
लंदन में शाही शादी का न्योता

प्रिंस चार्ल्स और कैमिला की शादी के अवसर पर मुंबई के दो डब्बावाले, रघुनाथ मेढगे और सोपन मारे, अप्रैल 2005 में लंदन आमंत्रित किए गए। वहाँ उन्हें महारानी एलिजाबेथ द्वितीय से मिलने और शाही परिवार के साथ नाश्ता करने का अवसर मिला। डब्बावालों ने कैमिला को पारंपरिक पैठणी साड़ी और प्रिंस चार्ल्स को महाराष्ट्रीयन पगड़ी भेंट की।



गैरी लॉक भी डब्बावालों के मैनेजमेंट के मुरीद

11 फरवरी 2011 को अमेरिका के तत्कालीन वाणिज्य मंत्री गैरी लॉक चर्चगेट स्टेशन के पास डब्बावालों से मिले। उन्होंने उनके काम करने के तरीके, रेलवे, साइकिल और हाथगाड़ियों से टिफिन पहुँचाने की व्यवस्था तथा रंग-कोड प्रणाली को समझा। डब्बावालों ने उन्हें शॉल और गुलदस्ता भेंट किया। गैरी लॉक ने डब्बे हाथ में लेकर तस्वीरें भी खिंचवाईं।



क्वीन मैक्सिमा की डब्बावालों से मुलाकात

30 मई 2018 को नीदरलैंड की महारानी मैक्सिमा मुंबई के अंधेरी रेलवे स्टेशन पहुँचीं। उन्होंने 150 से अधिक डब्बावालों से करीब 30 मिनट तक बातचीत की। उन्होंने जाना कि किस तरह भीड़भाड़ वाली लोकल ट्रेनों और सड़कों के बीच टिफिन सही समय पर पहुँचाए जाते हैं। उन्हें डब्बावालों के सिर पर रखे जाने वाले लकड़ी के कैरियर की छोटी प्रतिकृति भी भेंट की गई।

अनुमति नहीं मिली तब भी रिपोर्टर राणा ने जेल में घुसकर की लाइव कवरेज

फांसी की लाइव ब्रेकिंग रिपोर्ट का यादगार अनुभव

इंदौर की केन्द्रीय जेल में 5 अगस्त 1996 उमाशंकर पांडे नामक कैदी को फांसी पर चढ़ाया गया। कानून के शासन में ऐसे बहुत कम मौके आते हैं। पत्रकार के जीवन में तो ऐसी घटना को कवर करने का बहुत ही दुर्लभ अवसर आता है। लेकिन शहर में तब दैनिक भास्कर के युवा रिपोर्टर कीर्ति राणा ने इसे कवर किया। इसके लिए वे बिना प्रशासन की इजाजत के जेल में घुसे। वहीं से देश की पहली फांसी की ब्रेकिंग-लाइव रिपोर्ट की थी। उन्हीं के कलम से कवरेज की कहानी-



सिटी एडिटर, दैनिक प्रजातंत्र, इंदौर

इंदौर में उमाशंकर पांडे को 5 अगस्त 1996 को दी गई फांसी कवर करने के लिए मैं बिना इजाजत जेल में घुस गया था। इसकी खबर छपने के बाद उसी रात कलेक्टर गोपाल रेड्डी का फोन आया। जानना चाहते थे कि क्या सही में मैं जेल गया था? मेरा सवाल था, आप कलेक्टर के तौर पर पूछ रहे हैं या दोस्त बनकर? उनका कहना था, कलेक्टर हूं। मेरा जवाब था, आंखों देखा हाल तो जेल स्टाफ के किसी बंदे से पूछकर भी लिखा जा सकता है। अगर दोस्ती में पूछें तो कहूंगा कि इतनी बारीक रिपोर्टिंग तो वही कर सकता है, जो जेल में मौजूद हो। कलेक्टर बोले, तुम्हें जेल में डाल सकता हूं। मैंने कहा, बिल्कुल डाल दीजिए। गाय का पोटा जमीन पर गिरेगा तो कुछ ना कुछ लेकर उठेगा। जब जेल से बाहर आऊंगा, देख लेना कितने अधिकारी निपटेंगे।

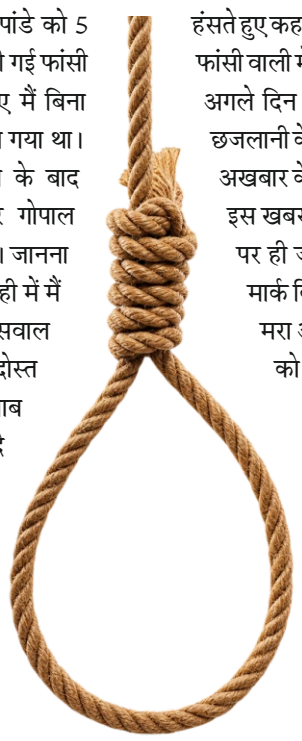

हंसते हुए कहने लगे, यार, तुम बुरा मान गए। मजाक कर रहा था। फांसी वाली मेरी ब्रेकिंग न्यूज ने तहलका मचा दिया था। अगले दिन नईदुनिया के सिटी चीफ दिलीप ठाकुर ने अभय छजलानी के कहने पर कलेक्टर गोपाल रेड्डी को चिट्ठी लिखी कि अखबार के रिपोर्टर को फांसी देखने की इजाजत कैसे दी गई? इस खबर का इंदौर, भोपाल सहित देशभर में शोर था। चिट्ठी पर ही जांच के आदेश करते हुए एडीएम सी.बी. सिंह को मार्क किया था। जांच चली, बयान हुए और 'सांप भी नहीं मरा और लाठी भी नहीं टूटी' वाला रास्ता मैंने ही एडीएम को सुझाया, जिससे कई बच गए!

छत्तीसगढ़ अख़बार के संपादक सुनील कुमार ने देश में पहली बार फांसी की आँखों देखी रिपोर्टिंग की थी। 25 अक्टूबर, 1978 को रायपुर सेंट्रल जेल में हत्या के आरोपी वैजू की फांसी की आंखों देखी रिपोर्टिंग की गई थी। वैजू पर दो हजार रुपयों के लिए और एक ही परिवार के चार लोगों की हत्या का आरोप था।

स्त्रोत - दैनिक भास्कर

नयांकुर

रंगमंच की रोशनी

रोशनी शर्मा दिखा रही हैं अभिनय का हुनर



एमए जर्नलिज्म की विद्यार्थी पटना की रोशनी शर्मा भोपाल से लौटकर अपने साथ अभिनय की कला लेकर जाएँगी। उन्होंने राजधानी में पच्चीस नाटक देखे जिसके बाद उनकी दुनिया ही बदल गई। वह दर्शक दीर्घा से उठकर मंच पर उतर गईं और दो नाटकों में अभिनय किया। उन्होंने केवल एक्टिंग नहीं की, बल्कि किरदारों को अपने चरित्र में उतारा। इसलिए उनका अभिनय जीवंत हो गया। वे बताती हैं- लगभग डेढ़ साल पहले मैं भोपाल आई और आने 15 के दिन के भीतर ही मैं नाटक देखने रंगश्री लिटिल बैले ट्रूप चली गई। संस्कृति से मेरा जुड़ाव कुछ बहुत पुराना भी नहीं रहा है, पर हां, मैं पटना से आती हूँ जहाँ की अपनी खुद की कला और संस्कृति काफ़ी समृद्ध रही है। पटना में भी अक्सर मैं नाटक देखा करती थी और ऐसे ही भोपाल में 1 साल के भीतर लगभग 25 नाटक देख चुकी हूँ और इनमें से खुद 2 का हिस्सा रही हूँ।

रोशनी थिएटर से पिछले 6 महीने से जुड़ी हैं जिसका नाम है रंगमाध्यम नाट्य संस्था। इस दौरान उन्होंने दो नाटकों में भाग लिया, पहला-' आज़ाद बुलंदी ... भगत सिंह ' जिसमें भगत सिंह की ज़िंदगी और स्वतंत्रता संग्राम के किस्सों को दिखाया गया था। इसका मंचन रवीन्द्र भवन में वंदे मातरम की रचना के 151 वें वर्ष पर आयोजित समारोह में किया गया था। दूसरा नाटक ' शादी का एल्बम ' था जिसमें एक शादी के घर की चहल -पहल, आपसी मन -मुटाव और उलझे हुए रिश्तों को दिखाया गया। इस नाटक में उन्होंने माँ का किरदार निभाया था। वह कहती हैं - अब बस खुद को बेहतर बनाते रहने की कोशिश रही हूँ और अभी भी उतनी ही लगन से थिएटर जाती हूँ।

नई पौध

क्या देश को बेहतर बनाने की जिम्मेदारी केवल दूसरों की है?

● **मूरत पटेल 1BAJCW**

हम अक्सर देश की समस्याओं पर चर्चा करते हैं तथा कभी व्यवस्था को दोष देते हैं। कभी सरकार को, तो कभी समाज को। लेकिन इन तमाम चर्चाओं के बीच एक सवाल कहीं पीछे छूट जाता है। आज का युवा केवल रोजगार और शिक्षा की अपेक्षा रखने वाला वर्ग नहीं रह गया बल्कि समाज को नई दिशा देने की क्षमता रखने वाली पीढ़ी भी है। याद रहे कि तथ्यों को समझने और अपनी जिम्मेदारियों को पहचानने की आवश्यकता है।

लोकतंत्र की खूबसूरती केवल सरकार चुनने में नहीं, व्यवस्था से सवाल करने, सही कार्यों की सराहना करने और गलत निर्णयों पर संवैधानिक तरीके से अपनी असहमति दर्ज कराने में है। हमें ऐसी सोच विकसित करनी होगी जहाँ किसी विचार का मूल्यांकन इस आधार पर न हो कि वह किस राजनीतिक पक्ष से आया है बल्कि इस आधार पर हो कि उससे आम नागरिक और देश का कितना हित होता है। एक बेहतर भारत की कल्पना केवल बड़ी इमारतों, सड़कों और तकनीकी विकास तक सीमित नहीं हो सकती, उसकी वास्तविक पहचान उस समाज से होगी जहाँ शिक्षा सबके लिए सुलभ हो युवाओं को अवसर मिलें, महिलाओं का सम्मान हो और किसी व्यक्ति की पहचान उसकी जाति, धर्म या आर्थिक स्थिति से न की जाए। परिवर्तन हमेशा किसी बड़े आंदोलन से ही शुरू नहीं होता। कभी वह एक ईमानदार सवाल से, कभी किसी अन्याय के विरुद्ध उठी आवाज से और कभी स्वयं की एक छोटी-सी अच्छी आदत से भी शुरू हो सकता है। हमें ऐसा भारत नहीं बनाना जहाँ सवाल पूछना विरोध समझा जाए। ऐसा प्रयास, जहाँ हम केवल समस्याओं की चर्चा न करें बल्कि समाधान का हिस्सा बनने की कोशिश भी करें। देश बदलने की इच्छा रखने से पहले हमें स्वयं से पूछना होगा कि इस बदलाव में मेरा योगदान क्या है?

हम सब माखन के लाल...

● **अंजलि रावत 1BAJCW**

घर से कोसों दूर, अनजान शहर की पगडंडियों पर जब पहला कदम रखा तो दिल में एक अजीब सी बेचैनी थी। सब कुछ खुद करना था-सुबह की तन्हाई से लेकर रात के सन्नाटे तक। पर धीरे-धीरे इस माखन नगरी ने अपनी बाँहें फैला दीं। यहाँ की सुबहें फूलों की खुशबू और शामें चहचहाती चिड़ियों के संग जीने की कला सिखा गईं। भोपाल की इन मस्त हवाओं और बदलते मौसमों ने कब इस परदेशी को अपना बना लिया, पता ही नहीं चला। हाँ, आज भी माँ के हाथों के बने खाने की महक और उनकी थपकियाँ रातों को बहुत याद आती हैं, पर सपनों की उड़ान ने इन दूरियों को भी अपने वश में कर लिया।

कभी जिन चेहरों से हम अनजान थे, आज वे ही कॉलेज न पहुँचने पर हज़ारों सवाल करने वाले पक्के यार बन गए हैं। इस विश्वविद्यालय ने सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं दिया, बल्कि हमें खुद से रूबरू कराया है। यहाँ हर कोई अपनी मंज़िल की तलाश में है। यह सिर्फ एक परिसर नहीं, बल्कि एक ऐसी छाँव है जो हर विद्यार्थी को माँ की तरह सींचती है। तभी तो गर्व से कहते हैं-हम सब 'माखन के लाल' हैं, जो हर मुश्किल को पार कर अपनी नई पहचान गढ़ रहे हैं।

नय सृजन

MySelf

● **Apurva Shandilya 1 MAJ**

How can I run
when my greatest enemy
lives in my veins,
In my mind,
Knows all my scars,
all my fears,
and wears my face?
How do I escape a war
that rages within,
When I am the shards of
broken glass
and the feet that step on them,
the wound and the salt that
stings it?
so tell me how do the greatest
enemy myelf?

आत्मा के लिए

● **दीक्षा झा 1MADJ**

भूख से नहीं डरता वो,
उसे डर है उस दिन से–
जब बच्चे सवाल पूछना छोड़ देंगे,
और व्यवस्था जवाब देना।
हर बीतता दिन
उसके जिस्म से एक हिस्सा ले रही है,
लेकिन हर गुज़रती साँस
हमारे ज़मीर से एक सवाल पूछ रही है।
कितनी विडंबना है
जिसने उम्र भर बच्चों को
भविष्य गढ़ना सिखाया,
आज वही अपने वर्तमान को
दाँव पर लगाकर भविष्य बचाने
की कोशिश कर रहा है।
कुछ अनशन पेट के लिए नहीं होते,
वे आने वाली पीढ़ियों की आत्मा के लिए
लड़े जाते हैं।

नृत्य की ऐश्वर्या



भोपाल की उभरती भरतनाट्यम कलाकार

बीए प्रथम वर्ष की ऐश्वर्या निगम भोपाल में भरतनाट्यम की नवोदित प्रतिभा हैं। उनका माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय में पहला ही वर्ष है और इसी साल इस होनहार ने विवि परिसर को अपने हुनर से प्रभावित कर लिया है। इनकी भरतनाट्यम नृत्य की यात्रा बचपन के उन खूबसूरत दिनों से प्रांरभ हुई जब वह मात्र 5 वर्ष की थीं। तब उन्होंने पहली बार नृत्य की दुनिया में कदम रखा। उस समय उन्हें कला की गहराई, इसकी परंपरा और साधना का पूरा ज्ञान नही था लेकिन घुंघरुओं की आवाज और संगीत की लय ने उनके मन मे एक अलग ही आकर्षण पैदा कर दिया।

धीरे -धीरे नृत्य इनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनता चला गया। शुरुआत में हर मुद्रा, हर कदम ताल को सीखना चुनौतीपूर्ण था लेकिन कठिन अभ्यास ने अनुशासन, धैर्य और समर्पण का महत्व सिखाया। सफर बहुत कठिनाइयों भरा था लेकिन गुरु श्वेता देवेन्द्र का मार्गदर्शन, परिवार का सहयोग और नृत्य के प्रति प्रेम आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहा। इनके लिए भरतनाट्यम केवल एक नृत्य शैली नही बल्कि इनकी पहचान, भावनाओं और इनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है।

इन्होंने म.प्र. का स्थापना दिवस, जी20 सम्मेलन, महाकाल कॉरीडोर, ब्रिक्स सम्मेलन, अयोध्या दीपोत्सव महोत्सव जैसे अनेक अवसरों /स्थानों पर नृत्य का प्रदर्शन किया है। ऐश्वर्या मानती हैं कि बचपन में शुरू हुआ यह सफर आज भी जारी है क्योंकि एक सच्चे कलाकार के लिए सीखने की कोई उम्र और कोई अंतिम सीमा नही होती है। घुंघरुओं से शुरू हुआ यह सफर मेरी पहचान बन गया है, नृत्य केवल कला नहीं, आत्मा की अभिव्यक्ति है।

● **रिपोर्ट : प्रिया भार्गव 1 MAJ**

शतायु पत्रकार प्रेमनारायण नागर

गणेश शंकर विद्यार्थी ने छापी जिनकी पहली ख़बर

वरिष्ठ पत्रकार प्रेमनारायण नागर ने बीते 9 अक्टूबर को अपनी आयु के सौ वर्ष पार कर लिए। शतायु होना उनकी जीवटता और जिजीविषा की अप्रतिम मिसाल है। वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे और इसी संजीवनी से मध्यप्रदेश के शिवपुरी जैसे छोटे से क़स्बे में उन्होंने आठ दशक तक पत्रकारिता की। इस तरह वे आंचलिक व ग्रामीण पत्रकारिता के भी प्रकाशमान स्तंभ बन गए हैं। हमारे अतिथि विद्वान डॉ. उदित्य सिंह सेंगर ने उनसे उज्जैन जाकर साक्षात्कार किया।

उनके शतायु उत्सव की बेला का पहला इंटरव्यू-



वरिष्ठ पत्रकार ,स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता

- **जन्म:** 1 अक्टूबर 1926
- **जन्मस्थान:** चाचौड़ा, तत्कालीन गुना जिला, मध्य प्रदेश
- **पत्रकारिता में सक्रियता:** 1947 से
- **प्रमुख कार्यक्षेत्र:** शिवपुरी की आंचलिक पत्रकारिता
- **वर्तमान निवास:** उज्जैन

आजादी के आन्दोलन से लेकर वर्तमान तक पत्रकारिता क्षेत्र में सजग पत्रकारिता हेतु पुरस्कृत

- राष्ट्रपति शंकरदयाल जी शर्मा द्वारा 1997
- राज्यपाल म.प्र. भाई महावीर द्वारा 1998
- मानव संसाधन मंत्री अर्जुनसिंह द्वारा 1994
- माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता पुरस्कार 1981
- शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान भोपाल 2002
- संस्थापक सदस्य-माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान भोपाल
- पूर्व अध्यक्ष आंचलिक पत्रकार संघ भोपाल
- पूर्व अध्यक्ष- शिवपुरी जिला भूमि विकास बैंक
- पूर्व सदस्य रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) राजभाषा हिन्दी सलाहकार समिति, नई दिल्ली
- सदस्य- भारत सरकार वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय केवाणिज्य विभाग की हिन्दी सलाहकार समिति, नई दिल्ली

नईदुनिया का खत्म होना अच्छा नहीं : नागर

प्रदेश के सर्वोत्कृष्ट समाचार पत्र 'नईदुनिया' से संबंध बहुत गहरा रहा। जब उससे जुड़ा तब 10 कॉपी शिवपुरी में आती थी। फिर बढ़कर दस हजार हो गई। बाद में उसे जागरण ने खरीद लिया। उसके बाद नईदुनिया खत्म हो गया। यह देश के लिए अच्छा नहीं हुआ था। उस अखबार ने आपातकाल के समय पहला पेज खाली रखा था। नईदुनिया स्पष्ट और सही लिखता था।

गांव की लाइब्रेरी ने डाला राष्ट्रप्रेम का बीज

हमारे गांव में लाइब्रेरी थी। वहां रोज सुबह और सायं अखबार पढ़ने जाते थे। वहीं से हमारे भीतर राष्ट्रीय भावना और देशप्रेम की जागृति पैदा होती गई। अखबार पढ़ने से स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ने की प्रेरणा मिली। बाद में खादी संस्था से जुड़ गए थे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद उस संस्था के अध्यक्ष थे। तब से ही हमारा उनसे परिचय हो गया था और आजादी के आंदोलनों में सक्रिय हो गये। जब भारत और पाकिस्तान का विभाजन हुआ तब लाखों लोग इधर से उधर उजड़कर आए और चारों तरफ हिंसा व खून-खराबा देखने को मिला। उस कठिन परिस्थिति में भी डॉ. प्रसाद ने बुलाया ताकि हम शरणार्थियों की व्यवस्था संभाल सकें। जो लोग दूसरी तरफ से आते थे, उन्हें कैंपों में ठहराना और उनके खाने-पीने का इंतज़ाम करना हमारा मुख्य कार्य बन गया था। इसके अलावा, जब आगे चलकर आपातकाल (इमरजेंसी) लागू किया गया, तो हमें वह राजनीतिक माहौल अच्छा नहीं लगा। तब जयप्रकाश नारायण के साथ हमने भी कांग्रेस छोड़ दी और इंदिरा गांधी को सत्ता से हटाने के आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल हो गए।

गांव की गरीबी पर चली पहली कलम

जब हम एक छोटे से गाँव में रहते थे। वहाँ आपसी झगड़े में एक मर्डर हो गया था। गांव के तहसीलदार को इस बारे में पता चला, तो वे गाँव आए और मेरे पास भी आए। हम पीड़ित परिवार के घर गए। वहाँ एक छोटी सी बच्ची अपनी गोद में एक बच्चे को लिए सफेद पानी जैसा कुछ पिला रही थी। हमारे साथ पटवारी भी था, उसने बच्ची से कहा कि 'लाली, जा अपनी माँ को बुला ला, साहब कुछ सहायता देने आए हैं।' उस बालिका ने आँखों में आँसू भरकर कहा कि अम्मा बाहर नहीं आएगी। जब पूछा गया कि क्यों? तो उसने बताया कि उनके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं हैं, वे नग्न बैठी हैं।यह सुनते ही हम सभी को बड़ी शर्मिंदगी और दुख महसूस हुआ। घर आकर मैंने कानपुर से निकलने वाले गणेश शंकर विद्यार्थी जी के समाचार पत्र में यह खबर भेजी कि देश में गरीबी के यह हाल हैं। वह समाचार खूब चर्चित हुआ। बस वही दिन था, उसके बाद मेरी कलम कभी बंद नहीं हुई। उस एक घटना के कारण मैं लगातार लिखता रहा, और हमेशा सकारात्मक लिखा, कभी नकारात्मक नहीं लिखा।

तब भारत का विभाजन रुक सकता था...

स्वतंत्रता के समय जो परिवर्तन हुए, उनमें मुख्य रूप से हिंदुस्तान और पाकिस्तान का विभाजन था। उसी से जुड़ा एक घटनाक्रम सुनाते हुए कहा कि एक बार रात के 12 बजे सरदार पटेल गांधी जी के पास आए और बोले कि बापू, अब आपको पाकिस्तान में नई शुरुआत करनी पड़ेगी, जिससे नाराज होकर गांधी जी नोआखाली चले गए थे. माउंटबेटन से इस आंदोलन की तारीख 30 अगस्त तक बढ़ाने के लिए कहा गया था, लेकिन जिन्ना अड़ गया कि वह 14 तारीख को ही सत्ता परिवर्तन कराएगा। मजबूरी में 14 तारीख तय करनी पड़ी। यदि एक महीने की भी देर हो जाती तो पाकिस्तान और हिंदुस्तान का बनना संभव नहीं हो पाता।इसका कारण यह था कि जिन्ना को कैंसर था और उसने अपनी यह बीमारी पूरी तरह गोपनीय रखी थी। यदि माउंटबेटन को यह बात एक महीने पहले पता चल जाती और एक महीना और रोक लिया जाता, तो शायद देश का विभाजन रुक जाता। यह सारी घटनाएँ मैंने अपनी आँखों से देखी हैं।



चरखा चलाते हुए (1956)

16 साल की उम्र में चले गए जेल

हमारा बचपन एक जमींदार परिवार में बीता। इसलिए उस समय पारिवारिक स्तर पर कोई बड़ी कठिनाई या दिक्कत नहीं आती थी। जब मैं लगभग 16 वर्ष का था, तब हम आज़ादी का झंडा लेकर बाज़ार में घूमे, जिसके कारण हमें पकड़कर जेल में डाल दिया गया। जब प्रशासन को पता चला कि हम एक जमींदार परिवार के लड़के हैं, तब हमें एक दिन जेल में रखकर छोड़ दिया गया।

अब वैसी आत्मीयता व एकजुटता कहाँ?

उस समय का समाज आज की तुलना में बहुत अलग और मिलजुल कर रहने वाला था। पूरा गाँव एक परिवार की तरह रहता था और अगर किसी के यहाँ कोई संकट आ जाए या आग लग जाए, तो सभी लोग तुरंत एक-एक बाल्टी पानी लेकर मदद के लिए दौड़ पड़ते थे। तब समाज में इस प्रकार की आत्मीयता और एकजुटता हुआ करती थी। आज यह सब देखने को नहीं मिलता है।

गांधीजी ने छुड़वा दिया पान

राजेंद्र प्रसाद जी के साथ एक बार महात्मा गांधी जी के पास गए थे। हम मीटिंग में बैठे और बातचीत होती रही। गांधी जी चरखा कात रहे थे। जब हम निकलने लगे, तो दरवाजे पर गांधी जी ने मुझसे कहा, 'क्या विद्वान लोग भी पान खाते हैं?' (दरअसल हम उस समय हम पान खाकर गए थे)। वह दिन है और आज का दिन है, मैंने कभी दोबारा पान नहीं खाया।

गांधी के अनुयायी, अब संघ के प्रशंसक पेज 6

गांधी के अनुयायी, अब संघ के प्रशंसक

शतायु पत्रकार प्रेम नारायण नागर ने 'विकल्प' से साझा किए संस्मरण

मैंने लगभग 80 वर्षों तक पत्रकारिता की है। इतने लंबे समय के अनुभवों पर तो पूरी किताब लिखी जा सकती है। हमने डाकुओं के दौर से लेकर न जाने कितने ही पड़ाव देखे हैं। यदि किसी विशेष घटना का उल्लेख करूँ तो मैंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) का जन्म और उसका प्रभाव अपने सामने देखा है। स्वयं कांग्रेसी विचारधारा का होने के बावजूद मैं यह स्वीकार करता हूँ कि देश को आगे बढ़ाने, सामाजिक चेतना जगाने और शैक्षणिक संस्थाएं व स्कूल खोलने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आजादी के बाद से हमने राजनीति में बहुत बदलाव देखे हैं। हर प्रांत में सरकारें आती-जाती रहीं, कई व्यवस्थाएं बदलीं। इतने विस्तृत राजनीतिक सफर और नेताओं पर तो किसी पुस्तक के माध्यम से ही विस्तार से बात की जा सकती है। आज भी विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में मुझे आमंत्रित किया जाता है और जहाँ तक संभव हो, मैं जाता भी हूँ। लेकिन अब 100 वर्ष से अधिक की आयु हो जाने के कारण शरीर उतना साथ नहीं देता है।



माधवराव सिंधिया से साक्षात्कार लेते हुए श्री नागर

इंदिरा-जेपी मुलाकात का वह यादगार पल



जब सभी विपक्षी पार्टियों ने मिलकर तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को हटाया तो वे अपनी जीत की खुशी में दिल्ली के रामलीला मैदान में मीटिंग कर रहे थे। जिस जगह जयप्रकाश नारायण ठहरे हुए थे, उसी स्थान पर मैं भी रुका था। जयप्रकाश नारायण ने मुझसे कहा कि रचल भैया, नागर! आपन चला! और वे सीधे इंदिरा गांधी की कोठी पर गए, जहाँ उन्हें हटाने की मीटिंग चल रही थी। वहाँ इंदिरा गांधी और जयप्रकाश नारायण की आँखें मिलीं तो दोनों उनमें आंसू थे। कुछ देर रुकने के बाद जयप्रकाश नारायण ने पूछा कि इंदु अब तुम्हारा खर्चा कैसे चलेगा? इस पर जवाब मिला कि बाबूजी (पंडित नेहरू) की पुस्तकों की जो रॉयल्टी आती है, उससे उनका खर्चा चल जाएगा। अंत में जयप्रकाश नारायण ने इंदिरा जी से कहा कि इंदु तुमने बहुत गलतियां की हैं, अब ऐसी गलती मत करना। यह सारा घटनाक्रम वक्ता ने प्रत्यक्ष रूप से देखा था। उस समय राजनीति में संबंध होते थे, दुश्मनी नहीं होती थी।

नागरजी का सोना, हम जौहरी

प्रेमनारायण नागर तब नईदुनिया के संवाददाता होते थे। खादी के एकदम स्वच्छ धोती-कुर्ता में साढ़े छह फुट की कद काठी का तेज तर्रार बुजुर्ग हाथ में झोला लेकर मेरी टेबल पर आता। बैठकर झोले से कागजों पर नीली स्याही से लिखी खबरें निकालकर सामने रखता। मैं आंचलिक (रीजनल) समाचारों की डेस्क का प्रभारी था। मुझे बताता कि आज क्या खबर लाए हैं। मैं उन्हें फिर बैठकर संपादित करता। संपादन इसलिए कठिन होता था क्योंकि वे जो देखते थे, बहुत ईमानदारी से लिखते थे। हमें उन्हें आज के अखबारी फार्मेट में ढालना होता था। बाद में नागरजी कहते-आपने तो सोने के गहने बना दिए। आप जौहरी हैं। उनकी खबरों के संपादन के लिए यह उनकी दाद होती थी। -शिकुवि

(नईदुनिया में प्रादेशिक समाचार डेस्क के तत्कालीन प्रभारी)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति विचार

उनकी कार्यशैली में गहरी लगन है और वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (**RSS**) की पृष्ठभूमि से आते हैं। मैं एक हल्के-फुल्के अंदाज में अक्सर कहता हूं कि मोदी जी की उम्र 77 वर्ष है और मेरी उम्र 100 है। मैं अपनी उम्र में से 25 वर्ष उन्हें देना चाहूँगा, ताकि वे देश की सेवा लगातार करते रहे।

पहले संपादक मालिक को बुलाता था

उस समय और आज की पत्रकारिता में बहुत बड़ा अंतर आ गया है। पहले के दौर में जब संपादक को आवश्यकता होती थी, तो वह मालिक को मिलने के लिए बुलाता था। आज स्थिति इसके बिल्कुल उलट है। अब मालिक संपादक को बुलाता है।



स्काउट गाइड नागर

सवालों से जूझता निकला युवा मन

सबसे बड़ी सीख कोई एक सलाह नहीं, बल्कि वही सवाल थे जो भीतर रह गए

● एका झा, 1MAJ

स्वामी विवेकानंद के 11 सितंबर 1893 को शिकागो धर्म सम्मेलन में दिए ऐतिहासिक संबोधन की स्मृति में आयोजित 'युवा भारत : कल, आज और कल' कार्यक्रम में प्रसिद्ध लेखक एवं शिक्षाविद् मुकुल कानिटकर को सुनना एक विद्यार्थी के तौर पर मेरे लिए सिर्फ एक भाषण सुनने का अनुभव नहीं था। शुरुआत में लगा कि यह युवाओं को प्रेरित करने वाला एक और संबोधन होगा, लेकिन कुछ ही देर में महसूस हुआ कि वे प्रेरणा देने से ज्यादा हमें अपने भीतर झांकने के लिए मजबूर कर रहे थे।

उनकी एक बात ने सबसे पहले ध्यान खींचा, "लानत है आपकी तरुणाई पर।" वे उस तरुणाई की बात कर रहे थे, जिसके पास ऊर्जा तो है, लेकिन क्या वह ऊर्जा सही जगह लग रही है? मोबाइल, रील्स और सोशल मीडिया के बीच हम घंटों अपना समय गंवा देते हैं और फिर भी खुद को स्वतंत्र मानते हैं। उनका सवाल था "अगर हम कहते हैं, 'मेरी मर्जी, मैं जो चाहूं वो करूंगा', तो क्या हम सच में अपनी मर्जी से एक रील के बाद मोबाइल बंद कर सकते हैं?" इसके बाद उन्होंने सवाल को मोबाइल से उठाकर जीवन तक पहुंचा दिया की "कौन हैं आप? कहां से आए हैं? क्या है आपके जीवन का लक्ष्य?" इस पर रुककर सोचना भूल जाते हैं।

एक विद्यार्थी और पत्रकारिता के छात्र के रूप में उनके संबोधन की यह बात भी खास तौर पर ठहर गई कि "नकारात्मक खबर अपने आप समाचार बन जाती है, लेकिन सकारात्मक खबर को सामने लाने के लिए पत्रकार को मेहनत करनी पड़ती है।" आधुनिकता को लेकर भी उनके विचार अलग थे। AI और तकनीक के दौर में आगे बढ़ना जरूरी है, लेकिन उसके लिए अपनी भाषा, संस्कृति और जड़ों को पीछे छोड़ना जरूरी नहीं। तकनीक सीखते हुए अपनी पहचान के प्रति आत्मविश्वास बनाए रखना भी आधुनिक होने का ही हिस्सा है। भाषण खत्म होने के बाद शायद इसकी सबसे बड़ी सीख कोई एक सलाह नहीं, बल्कि वही सवाल थे जो भीतर रह गए की क्या मैं अपनी ऊर्जा को सही दिशा दे रही हूं? क्या मैं खुद पर उतना नियंत्रण रखती हूं? और आखिर मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? शायद किसी भाषण का इससे बेहतर असर और क्या होगा कि मंच से उतरने के बाद भी उसके सवाल हमारे भीतर चलते रहें।

CAMPUS DIARY

एमसीयू की फिल्म 'विद्यार्थी' पुरस्कृत

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग द्वारा निर्मित लघु फिल्म 'विद्यार्थी' को फिक्शन श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह फिल्म महान स्वतंत्रता सेनानी, अमर शहीद और महान पत्रकार स्व. गणेश शंकर विद्यार्थी जी के जीवन, उनकी निर्भीक पत्रकारिता तथा विचारों पर आधारित है।



साहित्य प्रश्न मंच प्रतियोगिता में तृतीय स्थान

सप्तवर्णी कला साहित्य सृजन द्वारा आयोजित साहित्य प्रश्न मंच प्रतियोगिता में पत्रकारिता विभाग की सृष्टि कुमारी एवं नैनिका मिश्रा ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए तृतीय स्थान प्राप्त किया।



लोकेन्द्र सिंह की 'वंदेमातरम और डॉ. हेडगेवार' की स्क्रीनिंग

पत्रकारिता विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. लोकेन्द्र सिंह की एआई शॉर्ट फिल्म 'वंदेमातरम और डॉ. हेडगेवार' का प्रदर्शन उज्जैनी शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल (सीजन-4) में किया गया। फिल्म का निर्देशन और पटकथा लेखन डॉ. लोकेन्द्र सिंह ने किया है। यह उनकी पहली एआई फिल्म है। इससे पहले उनकी फिल्में 'बाचा : द राइजिंग विलेज', 'समिधा', 'गो-वर' और 'कद' राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित और सराही जा चुकी हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग से प्रकाशित

संपादक: मयंक कुमार **सहयोगी:** आशीष प्रताप सिंह मावई **संपादकीय मार्गदर्शन:** डॉ. राखी तिवारी

सलाहकार संपादक: प्रो. शिवकुमार विवेक, विनय श्री नेमा **लेआउट:** आकाश सैनी

प्रधान संपादक: विजय मनोहर तिवारी

publication.mcu@gmail.com